भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में डॉ. एनी बेजेंट का योगदान : एक ऐतिहासीक अध्ययन

प्रा. डॉ. रामभाऊ देवराव काशिद

इतिहास विभाग

महिला महाविदयालय, आंबेजोगाई,

जि. बिड

प्रस्तावना -

भारत की स्वतंत्रता के दौरान देश के अंदर बहुत से क्रांतिकारी थे. लेकिन भारत को आजाद कराने में न सिर्फ भारत के लोगों ने संघर्ष किया, बल्कि इसमें अन्य देशों के कुछ लोगों ने भी भारत को आजाद कराने में अपना समर्थन दिया. जी हाँ ब्रिटेन जोकि भारत पर राज कर रहा था उसी के साम्राज्य में कोई ऐसा भी था जो भारत को आजाद कराने में भारतियों का साथ दे रहा था, वह थी एनी बेसेंट. जोकि एक प्रसिद्ध सामाज सुधारक, महिलाओं के अधिकारों के लिए कार्य करने वाली कार्यकर्ता, लेखिका थीं. इनका जन्म तो ब्रिटेन में हुआ था लेकिन इन्होने भारत को अपना दूसरा घर बना लिया था. वे भारतीयों को उनका अधिकार दिलाना चाहती थी.

शोध निबंध के उद्देश -

1) होमरुल आंदोलन में डॉ. एनी बेजेंट के कार्ये का विश्लेशन करना.

2) स्वतंत्रता आंदोलन में डॉ. एनी बेजेंट के योगदान को स्पष्ट करना.

एनी बेसेंट लंदन के एक मध्यम वर्गीय परिवार में पैदा हुई थीं. उन्होंने अपने पिता को पाच साल की उम्र में खो दिया था. उनकी माँ ने उनका पालन पोषण किया. एनी की माँ बहुत परिश्रमी महिला थी, उन्होंने अपने परिवार का समर्थन करने के लिए लड़कों के लिए एक बोर्डिंग हाउस खोला था. किन्तु उनकी माँ अकेले यह सब करने में असमर्थ थी, इसके चलते उन्होंने एनी की देखभाल और उसकी शिक्षा के लिए अपने एक दोस्त एलेन मर्रीएट का सहारा लिया. एलेन की छत्र छाया में रहते हुए एनी ने अच्छी शिक्षा प्राप्त की. शादी के बाद, बेसेंट ने अपने लेखन कौशल को जाना और बच्चों के लिए छोटी कहानियां, लेख और किताबें लिखना शुरू कर दी. एनी ने अपने दोस्त चार्ल्स ब्रैडलाफ के साथ मिलकर चार्ल्स नॉवेल्टन की एक पुस्तक प्रकाशित की थी और साथ ही वे दोनों नेशनल सेक्युलर सोसाइटी और साउथ प्लेस एथिकल सोसाइटी में शामिल हुये. इसके बाद जल्द ही उन्होंने पूरी तरह से पारंपरिक सोच पर सवाल उठाना शुरू कर दिया. एनी ने चर्च के विरुद्ध भी कई लेख लिखे. और उन्होंने खुले तौर पर चर्च की स्थिति की निंदा की. इसके बाद 1870 के दशक में उन्होंने नेशनल रिफॉर्मर एनएसएस समाचार पत्र में एक छोटे सप्ताहिक कॉलम के लिए लिखना शुरू किया. एनएसएस और एनी दोनों का एक ही लक्ष्य था – एक धर्मनिरपेक्ष राज्य बनाना, और ईसाई धर्म द्वारा प्राप्त विशेष अधिकारों को समाप्त करना.|1

अपने पति से अलग होने बाद वे एक सार्वजनिक डॉ एनी बेजेंट वक्ता बनी. दरअसल सन १८८७ में वह लंदन के बेरोजगार समूह द्वारा आयोजित ट्राफलगार स्क्वायर में आयोजित विरोध प्रदर्शन में एक सार्वजनिक वक्ता के रूप में दिखाई दी. इसके बाद सन १८८८ में एनी लंदन की मैच गर्ल्स की हड़ताल में सक्रिय रूप से शामिल हुईं. उन्होंने उनके बेहतर वेतन और शर्तों के लिए हड़ताल के उद्देश्य से महिलाओं की एक समिति बनाई. इस हड़ताल में उन्हें बहुत लोगों का समर्थन प्राप्त हुआ, और अंततः स्थिति में सुधार हुआ और वेतन बढ़ गया. सन १८८८ में ही एनी मार्क्सवाद में शामिल हो गई और इसकी सर्वश्रेष्ठ वक्ता बन गई. उसी वर्ष वे लंदन स्कूल बोर्ड के लिए चुनी गई.2 इस दौरान वे लंदन डॉक हड़ताल में भी शामिल हुई थीं. मैच गर्ल्स की हड़ताल की तरह इसे भी बहुत अधिक सार्वजनिक समर्थन प्राप्त हुआ. एक सार्वजनिक वक्ता बनने के बाद एनी ने अलग – अलग

जगह की यात्रा करते हुए लेक्चर देना शुरू कर दिए और वे दिन – प्रतिदिन के मुद्दों पर बोलने लगीं. अपने सार्वजनिक भाषणों के माध्यम से उन्होंने सरकार से विकास, सुधार और स्वतंत्रता की मांग की. एनी बेसेंट ने अपने लेखन और सार्वजनिक भाषणों के माध्यम से एक लोकप्रिय दर्जा प्राप्त किया था. यह तब की बात थी जब उन्होंने अपने दोस्त चार्ल्स ब्रैडलॉफ के साथ मिलकर जन्म नियंत्रण पर एक किताब प्रकाशित की थी. इसके बाद उन्हें लोग जानने लगे थे. इस पुस्तक में एक मजदूर वर्ग के परिवार में बच्चों की संख्या को सीमित रखने की आवश्यकता बताई गई थी ताकि वे खुश रहें. हालाँकि उस समय उनके इस विचार की अत्यधिक विवादास्पद चर्च द्वारा निंदा भी की गई थी.3

शादी टूटने के बाद एनी राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने लगी. उस समय वे कुछ समाजवादी संगठनों से प्रभावित हुई थी जिससे उनकी राजनीतिक सोच में तेजी आई. उन्होंने इरिश में देखा कि कुछ लोग किसानों की जमीनों को हड़प रहे हैं, इसलिए उन्होंने इरिश के किसान के पक्ष में बोलना शुरू कर दिया और साथ ही इसके लिए उन्होंने इरिश होमरुल के साथ अपना संपर्क मजबूत किया. इस दौरान उन्होंने एक इरिश लेखक जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के साथ दोस्ती की. फिर इरिश रिपब्लिकन फैबियन ब्रदरहुड के मेनचेस्टर मार्टियर्स ने उनकी राजनीतिक सोच को बदल दिया. जिसके बाद उन्होंने फैबियन समाजवाद पर सार्वजनिक भाषण लिखना और देना शुरू कर दिये. इस तरह से ये राजनीतिक गतिविधियों में दिखाई दी. एनी सन १८७५ में थियोसोफिकल सोसाइटी की संस्थापक मैडम ब्लावाट्स्की से मिली. इस सोसाइटी की स्थापना 'यूनिवर्सल ब्रदरहुड ऑफ ह्यूमैनिटी' के उद्देश्य को पूरा करने के लिए की गई थी. इससे पूरे विश्व में सभी राष्ट्रों के बीच भाईचारा फ़ैलाने पर बढ़ावा दिया गया.4 एनी उनकी शिष्या बन गई और उनके विचारों को अपनाते हुए, एनी सन १८८७ में थियोसोफी में परिवर्तित हो गई. सन १८८९ में वे थियोसोफिकल सोसाइटी की सदस्य बनी. इसके बाद उन्होंने सन १८९० में फेबियन सोसाइटी और मार्क्सवादियों के साथ अपने सम्बन्ध तोड़ दिए. सन १८९१ में उनकी गुरु मैडम ब्लावाट्स्की का निधन हो गया. इसके बाद पहली बार एक थियोसोफीकल सोसाइटी के सदस्य के रूप में सन १८९३ में उन्होंने भारत की यात्रा की और भारत की स्वतंत्रता और प्रगति में भाग लिया.| 5

एनी बेजेंट एक महान और साहसी महिला थीं, जिन्हें एक स्वतंत्रता सैनानी के रूप में जाना जाता था. क्योकि उन्होंने लोगों को उनकी वास्तविक स्वतंत्रता दिलाने में मदद करने के लिए कई युद्ध लड़े थे. वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी शामिल हुईं थीं, और उन्होंने भारत को एक स्वतंत्र देश बनाने का अभियान शुरू किया. एनी भारतीय लोगों की संस्कृति, परंपरा को काफी पसंद करती थी, और उनकी मान्यताओं को समझती थी. उन्होंने सन 1893 में भारत आने के बाद भारत को अपना घर बना लिया और अपने बुलंद भाषण से भारतीय लोगों को गहरी नींद से जगाना शुरू कर दिया. एक बार जी ने भी उनके बारे में कहा था कि एनी ने भारतियों को गहरी नींद से जगाया है. जब वे सन १९०८ में थियोसोफिकल सोसाइटी की अध्यक्ष बनीं, तो उन्होंने भारतीय समाजों को बौद्ध धर्म से हिन्दू धर्म की ओर लाने के लिए मार्गदर्शन करना शुरू किया. साथ ही उनकी शिक्षाओं पर जोर दिया. एनी ने लड़कों के लिए 'द सेंट्रल हिन्दू कॉलेज' नाम से एक स्कूल भी खोला. उन्होंने खुद को भारत की समस्या समाधानकर्ता के रूप में व्यक्त किया. एनी ने भारत की स्वतंत्रता के लिए अभियान पर कड़ी मेहनत की और भारत की स्वतंत्रता की मांग करते हुए विभिन्न पत्र और लेख लिखे. कॉमन विल, न्यू इंडिया समाचार पत्र की एडिटर भी बनीं और देश में ब्रिटिश शासन के खिलाफ आवाज उठाई. ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह करने के लिए उन्हें गिरफ्तार भी किया गया था. दिलचस्प बात यह थी कि देशभर के अलग – अलग भारतीय राष्ट्रवादी समूहों ने उनकी गिरफ़्तारी के लिए विरोध किया. जिसके कारण उन्हें रिहा कर दिया गया था. उनकी रिहाई ने ब्रिटिश शासन से भारतीयों की स्वतंत्रता की धारणा को मजबूत कर दिया था. लोगों में आत्मविश्वास की उम्मीद जगी. एनी ने भारत में भी महिलाओं के अधिकार, मजदूरों के अधिकार, जन्म नियंत्रण अभियान और फैबियन समाजवाद जैसे कारणों के लिए संघर्ष किये.6

एनी बेजेंट नेशनल सेक्युलर सोसाइटी में एक प्रसिद्ध वक्ता, थियोसोफिकल सोसाइटी की सदस्य, सबसे प्रसिद्ध लेक्चरर और एक लेखिका थी. एनी को लंदन स्कूल बोर्ड में टावर हैमलेट्स के लिए चुनी गयी थी. एनी ने सन १९२२ में भारत में 'हैदराबाद नेशनल कॉलेजिएट बोर्ड' की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया था. एक थियोसोफिस्ट के रूप में उनकी निरंतरता के चलते वे सन 1923 में भारत के राष्ट्रीय अधिवेशन की महासचिव बनीं. सन 1926 में थियोसोफी पर उनके लेक्चर देने के बाद उन्हें विश्व शिक्षक घोषित किया गया था. एनी जब सन 1907 में थियोसोफिकल सोसाइटी की अध्यक्ष बनी थी, तब उसका मुख्यालय

मद्रास के अडयार में बनाया गया था जोकि वर्तमान में चेन्नई में है. भारत एक ऐसा देश है जिसमे हर महान धर्म को एक घर मिलता है.एक पैगम्बर हमेशा अपने अनुयायियों की तुलना में बहुत बड़ा होता है, और साथ ही उन लोगों की तुलना में बहुत अधिक उदार भी होता है जो उनके नाम के साथ खुद को जोड़ते हैं. भारत में मेरा जीवन है, जब से सन 1893 से मैंने भारत में अपना घर बनाया है तब से मैंने अपने आप को केवल एक उद्देश्य के लिए समर्पित किया हैं, वह है भारत को उसकी प्राचीन स्वतंत्रता वापस दिलवाना. जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है तो उस व्यक्ति का शरीर मर जाता है, लेकिन उसने जो अच्छे कर्म किये है वह उसके कारण हमेशा जीवित रहता है. इसलिए कहते हैं कि वह एक जीत के रूप में जीवित रहता है और एक जीव के रूप में मृत होता है. जब आप जानते हैं कि आप निम्न स्तर का कार्य करते हैं तो आप पाप कर रहे होते हैं. अतः जहाँ ज्ञान नहीं है वहां पाप होता है. यही पाप की परिभाषा है. बिना सोचे समझे कोई राजनीति नहीं की जा सकती है. इंग्लैंड की सबसे बड़ी भूल थी, भारत की गाँव प्रणाली का विनाश करना. भारत में एक अकेला धर्म संभव नहीं है, लेकिन सभी धर्मों के लिए एक सामान्य आधार को मानना, उदारता को बढ़ाना, धार्मिक मामलों में सहनशीलता की भावना आदि संभव है.

इस तरह एनी बेसेंट एक ऐसी शख्सियत थी जिन्हें ऑल राउंडर कहना गलत नहीं होगा. एनी के द्वारा इंग्लैंड एवं भारत में किये गये कार्यों को भी नकारा नहीं जा सकता, जोकि काफी प्रभावशाली थे. एनी एक महान महिला थी जिन्होंने भारत को एक स्वतंत्र देश बनाने में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में विशेष भूमिका निभाई थी.

निष्कर्ष -

सन १९३१ में वह गंभीर रूप से बीमार हो गई. दो साल तक बीमार रहने के बाद उन्होंने २० सितंबर, १९३३ को ब्रिटिश भारत के मद्रास प्रेसीडेंसी के अडयार में अंतिम साँस ली. उनका अंतिम संस्कार भारत के बनारस शहर में गंगा नदी में किया गया था, यह उनकी इच्छा थी. मरने के बाद एनी बेसेंट को सम्मानित करने के लिए उनके नाम पर भारत के चेन्नई शहर में थियोसोफिकल सोसाइटी के पास एक बसंत नगर बनाया गया है. इसके साथ ही उनके द्वारा शुरू किये गये एक स्कूल को उनके सम्मान में बेसेंट हिल स्कूल नाम दिया गया है.

संदर्भ ग्रंथ सुची -

१) प्रा.आर.एल.शुक्ल, आधुनिक भारत का इतिहास, लक्ष्मी नारायण प्रकाशन आग्रा २००९ पृ. ११६

२) डॉ. जयसिंगराव पवार, आधुनिक भारताचा इतिहास, फडके प्रकाशन कोल्हापुर २००१ पृ. १२२

३) डॉ.शांता कोटेकर, सुमन वैद्ये, आधुनिक भारताचा इतिहास, साईनाथ प्रकाशन नागपुर २००७ पृ.१६४

४) प्रा. शे.गो.कोलारकर, आधुनिक भारताचा इतिहास, मंगेश प्रकाशन नागपुर २००६ पृ.८४

५) प्रा. नागोरी एस.एल, आधुनिक भारताचा इतिहास, आर.बी.एस. पब्लिकेशन जयपुर २००२ पृ. १७७

६) डॉ. अनिल कटारे, आधुनिक भारताचा इतिहास, कैलास पब्लिकेशन औरंगाबाद २००३ पृ. ६३